अनारको

आज स्कूल नहीं जाना चाहती थी!

सतीनाथ षडंगी

एक पर एक चिड़ियाँ उड़ती जा रही हैं, जैसे ज़मीन तोड़कर चिड़ियों का फव्वारा फूट रहा हो। इतनी सारी चिड़ियाँ कि हर तरफ रंग-बिरंगा हो रहा हो। फिर और चिड़ियाँ, फिर और चिड़ियाँ। इतनी सारी कि गिनना शुरू करो तो फिर गिनते ही रहो। और गिनते-गिनते बस गिनती ही रह जाए। और चिड़ियाँ देखना ही भूल जाओ... "अन्नो, अन्नो, चल अब उठ जल्दी।" अम्मी ने झकझोरा। और उसका सपना टूट गया। खैर, अनारको ने आँख मलते हुए कुछ सोचा, फिर खुश होकर कहा, "अच्छा अम्मी, ठाकुरजी को जल चढ़ाना है ना?" अम्मी कान के पास मुँह ले गई और कहा, "नहीं आज से तेरा सबेरे का स्कूल हो गया है, तुझे याद नहीं? उठकर स्कूल जा।"

अनारको उठ तो गई, पर उसकी तो पूरी योजना थी कि ठाकुरजी को जल चढ़ाने के बहाने आज फिर सेमल के नीचे बैठेगी, सो उसने कहा, "पर अम्मी, ठाकुरजी को खुश करना तो ज़रूरी है न?" अम्मी ने लम्बी साँस छोड़ी। फिर कहा, "नहीं स्कूल जाना उससे ज़्यादा ज़रूरी है। पढ़ेगी नहीं तो विद्या कहाँ से आएगी? जा, तैयार हो जा।" अनारको ने आखिरी कोशिश की, "लेकिन अम्मी, अगर ठाकुरजी खुश हो जाएँगे तो विद्या तो अपने-आप आ जाएगी, फिर स्कूल क्यों जाना?" अम्मी ने दूसरी बार लम्बी साँस छोड़ी और कहा, "अच्छा जा, पापा से पूछ ले।" अनारको को यही बात अच्छी नहीं लगती कि अम्मी हमेशा यह कह देती है कि अच्छा अब पापा से ही पूछ ले। पर, उसे मालूम था कि अब पापा के पास जाना ही पड़ेगा।

"पापा, मैं आज स्कूल नहीं जाऊँगी।"

"क्या कहा, स्कूल नहीं जाएगी? तो विद्या कहाँ से आएगी?" पापा ने ज़रा डपटकर पूछा। पर अनारको का तो एकदम मन ही नहीं था स्कूल जाने का। उसने पूछा, "पापा विद्या मिल जाने से मैं क्या करूँगी?" पापाजी ऐसे सवाल के लिए तैयार नहीं थे, खीझ गए। फिर कहा, "तू जो विद्या सीखेगी तो बड़ी होकर तेरे काम आएगी। चल, तैयार हो जा।" पर, अनारको जमी रही, "अभी से विद्या सीखूँगी तो बड़ी-बड़ी होते-होते भूल जाऊँगी।" पापा ने चिल्लाते हुए कहा , "इत्ती-सी लड़की और सुबह होते ही बक-बक, बक-बक। चल, हाथ-मुँह धो, कुल्ला कर।"

मजबूरन अनारको ने वह सब किया जो उसे कहा गया था। गुस्से में रगड़-रगड़कर पाँवों को धोया तो कल शाम की धूल पूरी छूट गई और पानी की काली-काली धार सरकने लगी। अनारको उसका सरकना देखती रही। फिर कुछ सोचा और पापा से कहा, "एक बात पूछूँ?" पापा ने कहा, "चल पूछ।"

"विद्या क्या सिर्फ स्कूल से ही आती है, पापा?"

"क्या उल्टे-सीधे सवाल करती रहती है। जा, रोटी रखी होगी, खा ले और बस्ता उठाकर स्कूल जा।"

चित्रः आयशी सदर

अनारको का बहुत-बहुत मन था कि पापा से कहे, "पापा एक बात और पूछूँ और फिर पूछे कि आप जब भी कोई चीज़ जानते नहीं तो यह क्यों कह देते हैं कि उल्टा सवाल मत कर?" लेकिन अनारको ने हिसाब लगाया और समझा कि अभी पापा से और सवाल नहीं पूछ सकते, नहीं तो पिटाई होगी। सो, वह ड्रेस पहनकर रसोई में गई। झटपट रोटी खाई, बस्ता उठाया और स्कूल चल दी।